बिन बुलाए आया मेहमान–कोविड -19

लावण्या रतीश

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन, केरल

ओह, यह चीन में है ... इतनी चिंता मत करो। ऐसा था दिसंबर 2019 और जनवरी 2020 के अंत के दौरान कोरोना के प्रति हमारा दृष्टिकोण। जब हम एरणाकुलम के लोग नए साल के जश्न में व्यस्त थे, हमने कभी नहीं सोचा था कि श्री ट्रम्प द्वारा घोषित चीनी वायरस हमारे घर तक पहुंच जाएगा।

क्या हम उस समय इसके बारे में कभी परेशान थे? हर्गिज नहीं। हम मरड फ्लैटों के विध्वंस पर अधिक केंद्रित थे। हमारे जिले के कलेक्टर साहब श्री सुहास, बेहद कुशल और ज़िम्मेदार नेता हैं, जो वास्तव में एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण विध्वंस के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे। मैं उनके प्रयासों के लिए तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ। पहले से ही अक्तूबर 2019 में एरणाकुलम ने अप्रत्याशित बाढ़ की स्थिति का सामना किया था जिससे हमारी कई गतिविधियां बाधित हुई थीं। यह बाढ़ कुछ लोगों पर बुरी तरह प्रभावित हुआ था, जबकि कुछ को बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुआ।

हमने इसे भी पार किया और हर बार की तरह यह भी गुज़र गया

हम पानी और बारिश से डरने लगे। अब लोगों का रवैया ऐसा था जैसे की अगर घर खरीदते हैं, तो उन घरों को खरीदना जो बाढ़ वाले क्षेत्र में नहीं हो, गाडी खरीदते हैं, तो पर्किंग ऊपरी स्थल में रखो और ए. टी. एम. मशीनों को भी ऊपरी स्थल पर स्थापित होता है और अन्य देशों से मदद प्राप्त होने में भी कोई खतरा नहीं था।

लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि एक ही ऑफिस रूम में अपने सहकर्मी के साथ रहना या बस में सफर करना या किसी भोजनालय में खाना खाना कभी खतरा होगा? क्या हम सोचने लगे कि अकेले रहना ज़्यादा सुरक्षित है? मैंने कभी नहीं सोचा था कि शैक्षणिक संस्थानों जैसे सबसे बड़े व्यापार मॉड्यूल कभी महीनों के लिए बंद हो जाएंगे। शानदार मॉल, समुद्र तट, पार्क और हमेशा मनोरंजक सिनेमा और नाटक थिएटर के बारे में क्या?

क्या हमने कभी महसूस किया है कि प्ले स्कूल और शिशु सभाएं कामकाजी माताओं को उनके काम के घंटों के दौरान अपने बच्चों को इन नर्सरी में भेजने के लिए आतंक का स्रोत होंगे ?

हम रेड ज़ोन में हैं ...

भारत में वायरस का प्रवेश 30 जनवरी 2020 को हुआ था। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोनवायरस को 100 देशों में फैलने के बाद 11 मार्च 2020 को एक महामारी घोषित किया गया था, जिसमें 4,000 से अधिक लोग मारे गए हैं।

यह केरल में था जहां चीन से आया गया पहले तीन मामले दर्ज किए गए थे। हमारी सरकार के अद्भुत स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्रीमती शैलजा टीचर ने मेडिकल टीम के साथ समझदारी से काम लिया और वायरस से छुटकारा पाया।

यह वास्तव में भारतीयों के लिए एक बड़ी राहत और खुशी का क्षण था, लेकिन यह खुशी ज़्यादा देर तक नहीं थी, क्योंकि हम भूल गए थे कि वायरस दुनिया के अन्य हिस्सों से भी आ सकता है। चीन के बाद इटली कोरोना का अगला उपरिकेंद्र बन गया था। दिल्ली के तब्लीगी जमात के समरोह के बाद हालात बदल गए थे, क्योंकि राज्यों में ऐसे मामले सामने आने लगे, जहां संक्रमण सबसे कम हो सकता है। केरल सावधानीपूर्वक स्क्रीनिंग और संपर्क ट्रेसिंग उपायों के साथ अगले चरण के लिए पहले से ही तैयार था। इसके बाद दिनांक 25 मार्च 2020 को हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने 21 दिनों के लिए संपूर्ण लॉकडाउन की घोषणा की।

लॉकडाउन ...

कोरोना "मुकुट" निश्चित रूप से हमारे जीवन को बदल दिया था। हम में से एक, ऐसे महामारी के बारे में शायद इतिहास की किताबों में पढ़े होंगे, लेकिन हमने कभी नहीं

सोचा था कि हम अपने जीवनकाल में इसका सामना करेंगे। मेरे माता-पिता कभी-कभी कहते हैं कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वे अपनी पीढ़ी में ऐसा संकट देखेंगे। हमेशा की तरह वे स्वस्थ और बिना मिलावट वाले खाद्य पदार्थों के युग में रहते थे। लॉकडाउन एक ऐसी चीज़ थी, जिसके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था या सुना भी नहीं था। बेशक लॉकडाउन कई लोगों के लिए समान नहीं था। लॉकडाउन के दौरान कई अच्छी चीज़ें भी हुईं। हमने अपने प्रियजनों के साथ अधिक समय बिताया। लोगों ने अपने जीवन में छोटी चीज़ों को महत्व देना शुरू कर दिया। हमने उन चीज़ों को छोड़ना शुरू कर दिया जो हमारे सामान्य दिनों में हम सबसे अधिक प्राथमिकता देते थे। भोजन एक ऐसी चीज़ थी, जो हमारी स्वाद कलियों को संतुष्ट करने से ज़्यादा एक आवश्यकता बन गई थी। दूसरी तरफ हममें से कई लोगों को यात्रा, ट्रेकिंग, यहां तक कि मैराथन और फिटनेस सेंटरों को भी छोड़ना पड़ा, यहाँ तक कि अपने रिश्तेदारों से भी मिलना हमारी प्राथमिकता सूची में नहीं था। कई लोगों के लिए शराब छोड़ना एक बड़ी चुनौती थी। अधिकांश लोगों के लिए धार्मिक केंद्रों का दौरा करना पूरी तरह से दिल तोड़ने वाला था। एक और आश्चर्य की बात यहाँ के भिखारियों, परित्यक्त और आवारा कुत्तों के लिए दी गई देखभाल था। ऐसी मानवीय चिंता के लिए केरल सरकार को धन्यवाद। उन्हें निकटतम आश्रयों में स्थानांतरित कर दिया गया और भोजन दिया गया। फिर भी गरीब हमेशा गरीब ही बने रहे, क्योंकि इस दौरान उनकी कोई आय नहीं हुई। दैनिक आय पर रहने वाले लोगों को सरकारी खाद्य किट और सामुदायिक रसोई पर निर्भर करना पड़ा। हमारी अर्थव्यवस्था डूब रही थी। लेकिन फिर भी हमारी आशा एक नए जीवन के लिए है और यह भी बीत जाएगा।

हमारे शहर बिना किसी व्यवधान और प्रदूषण के मौन घाटियाँ थे। पक्षियों के कलरव और लहरों की आवाज़ ने कोच्ची शहर को शांतिपूर्ण बना दिया था। यह हमारे पर्यावरण को पुनर्जीवित करने और मानव शोषण से मुक्त करने का समय हो सकता है। केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के मात्स्यिकी पर्यावरण

प्रबंधन प्रभाग द्वारा कोच्ची के तटीय क्षेत्रों के पानी की गुणवत्ता सूचकांक का विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण से यह पाया गया कि लॉकडाउन के बाद पानी की गुणवत्ता लॉकडाउन से पूर्व बेहतर थी।

लॉकडाउन ने कार्यालय में काम करने वाले लोगों को घर पर काम करना, कुछ लोगों को घर पर बैठकर आराम करने के लिए और दूसरे एक समूह के लिए यह उनकी आय के बारे में चिंता का विषय था। लेकिन एक समूह ऐसा था जिसे अपनी स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ा। वे गृहिणी और घर की मां थीं। उनके पास पहले जैसा ही काम था और वास्तव में अब काम तो अधिक हो गया।

भले ही हम लॉकडाउन के दौरान सरकार से मुफ्त राशन के साथ अपने घरों में सुरक्षित थे, हमारे प्रिय, विदेश में फंसे थे। उनमें से अधिकांश घर वापस आना चाहते थे क्योंकि वे बेरोज़गार थे और यह भी नहीं जानते थे कि उन्हें अपनी मातृभूमि में वापस कैसे आना है। हमारी अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ बंद थीं। कोई फ्लाइट नहीं थी। बहुतों को पता नहीं था कि घर वापस आने पर भी उन्हें क्या करना है। उनमें से अधिकांश को कई कर्ज़ चुकाने और कई पेट भरने की ज़रूरत भी थी और कई जीवन उन पर निर्भर थे। कुछ लोग छोटे काम के दौरे कुछ समय के लिए और चिकित्सा उपचार के लिए भी गए थे। ऐसे लोग भी विदेश मे फस गये थे। किराए न देने के कारण कुछ प्रवासियों को ठेहरे हुए लॉज से बाहर भी निकाले गए थे। एक समूह ऐसे भी था जो हमारे देश के विभिन्न राज्यों में फंसे हुए थे। उनमें से ज़्यादातर मज़दूर थे। उन्हें भोजन और आपूर्ति प्रदान की गई थी, फिर भी वे अपने घरों तक पहुंचने के लिए उत्सुक थे।

पर्दे के पीछे बिना किसी शिकायत के, दिन-रात काम करने वाले दोनों स्वास्थ्य कर्मचारियों और हमारे पुलिस अधिकारियों के बारे में फ्रंटलाइन वर्केर्स का क्या कहना। जब हम आराम से घरों में बैठे थे, वे अपने पी पी ई और वर्दी में थे, बिना किसी आराम के क्षेत्र में अपने परिवार और प्रियजनों को छोड़कर हमारी सुरक्षा के लिए लड़ रहे थे। पी पी ई असहज हैं क्योंकि इन्हें पहनने से हम न तो पानी पी सकते हैं और न ही घंटों तक पेशाब कर सकते हैं। आखिरी नहीं बल्कि सबसे अधिक प्रयास करने वाले और सबसे आगे चलकर हमें प्रेरक देने वाले शक्ति केरल सरकार की टीम है, उन्हें कभी नहीं भूलना चाहिये। यह जानना और भी दयनीय है कि अभी भी कुछ लोग इस महामारी की गंभीरता को नहीं समझ आया हैं।

कड़ी तोड़ें अभियान .....जाओ कोरोना जाओ...

केरल की इस “कड़ी तोड़ें अभियान” और लोगों की पूर्ण सहयोग के द्वारा, कोरोना महामारी को घुटनों पर लाने में सफल रहा. केरला ने आखिरकार वक्र को सफलतापूर्वक समतल कर दिया. इसके लिये दुनिया भर से भी प्रशंसा मिली . यहाँ की स्थिति सामान्य रूप में होने लगीं। एक महीने के लंबे लॉकडाउन के बाद भारतीय सरकार ने राज्यों को चरणबद्ध तरीके से लॉकडाउन चरण खोलने के लिए कहा . राज्य की सीमाएं खुलीं और भारत कोरोना के साथ आगे बढ़ रहा था। हम हमेशा की तरह काम पर जाने लगे। लेकिन इस बार हमारे दैनिक जीवन में एक छोटा सा बदलाव आया।

हाँ ... हमें फेस मास्क पहनना था। जब हमें अपने घरों से बाहर निकलना था तो फेस मास्क, हैंड वाश और सैनिटाइज़र अनिवार्य कर दिए गए थे। शुरू में हम सभी को सैनिटाइज़र और फेसमास्क से कठिनाई होती थी। हम अपने सहयोगियों को भी नहीं पहचान

सके। हमें उनकी पहचान करने के लिए पोशाक और काया देखना पड़ा। इसके अलावा सैनिटाइज़र बाज़ार में उपलब्ध नहीं थे।

इस परिस्थिति में हमने अपने सी. एम. एफ. आर. आइ – एवं एफ. इ. एम. प्रभाग के प्रयोगशाला में सी. एम. एफ. आर. आइ के निर्देशक माननीय डॉ. ए. गोपालकृष्णन के अनुमोदन एवं एफ. इ. एम. प्रभाग के प्रमुख डॉ. वी.कृपा जी , जो अब हमरे साथ नहीं है, उनके नेतृत्व और वरिष्ठ हेड इंचार्ज प्रभारी वैज्ञानिकों डॉ. पी. कलाधरन जी और डॉ. डी. प्रेमा के मार्गदर्शन से हैंड सैनिटाइज़र तैयार करना शुरु किए ताकि पूरे संस्थान को सैनिटाइज़र प्रदान किया जा सके। इन सबकी कभी उम्मीद नहीं थी। हमने न केवल सैनिटाइज़र तैयार किये इसके अलावा हमने अपने संस्थान में थर्मल स्कैनिंग भी शुरू की .

विदेशी भारतीयों को वापसी ... अपने घर वापस आएँ

केरल में स्थितियां सुरक्षित हो रही थीं। लेकिन हमारे कई परिवारों के प्रियजन विदेश में थे और उन्हें वापस लाया जाना था। बहुत सारी तैयारियों के बाद हमारी भारत सरकार ने "वंदे भारत मिशन" के माध्यम से हमारे एनआरआई एवं प्रवासियों को स्वदेश वापस लाने की व्यवस्था की। कोरोना से भी अधिक लोग भूख और

अवसाद से प्रभावित होने लगे। एनआरआई और अन्य राज्यों के लोगों के लौटने से जोखिम की संभावना बढ़ गई जो बहुत अधिक थी। यह उन सभी के लिए भोजन, रहने और उपचार प्रदान करने के लिए एक बड़ी चुनौती बनने जा रहा था। मेरे मन में कई सवाल थे। क्या हमारे राज्य में यह सुविधा थी? क्या हम तैयार हैं हालांकि 100% अपेक्षित नहीं कर सकते। लेकिन केरल इसके लिए काफी तैयार था। अन्य राज्यों के बारे में नहीं जानती। अधिकांश केरलवासियों के परिवार में से एक सदस्य था जो विदेश में था।

कोरोना के साथ चलो ...

कुछ समय के लिए हम महसूस कर रहे थे कि हम सुरक्षित हैं। लेकिन हालत खराब हो रही है। एक बार जब अनलॉक चरण शुरू हो गए थे, तो केरल में भी मामले बढ़ने लगे। हमने कोरोना के साथ रहना शुरू कर दिया था। एक तरफ हमें अपनी अर्थव्यवस्था को सुरक्षित रखने की ज़रूरत है और दूसरी तरफ हमारे अस्पताल के बेड कम पड़ रहे हैं। त्रिवेंद्रम और एर्नाकुलम अब अधिक से अधिक स्थानीय प्रसारण मामलों के साथ सुर्खियों में रहे हैं, इसके बाद कासरगोड और मलप्पुरम हैं। हमें काम करने के लिए बाहर जाने की ज़रूरत थी और साथ ही साथ हमें अपना जीवन भी सुरक्षित रखना था। दिल में एक डर के साथ हम कोरोना के साथ चल रहे हैं। घर पे रहना और सुरक्षित रहना असंभव था। इसके विपरीत घर से बाहर रहना और सुरक्षित रहना नई नीति एवं चुनौती थी।

आगे क्या...

क्या हम एक और इटली बनने जा रहे हैं ? ... या क्या हम इससे निपटने में सक्षम होंगे? मुझे लगता है कि अगर हम कई चीज़ों को छोड़ देते हैं तो हम इससे निपट सकते हैं। बहुत ज़रूरी होने पर ही हमें बाहर जाना चाहिए।

कुछ समय के लिए हमारे कार्यालयों/ दफ्तरों और कंपनियों को अपने कर्मचारियों को घर से या कंपित उपस्थिति के साथ अधिकतम काम करने में सक्षम बनाना चाहिए। इससे अन्य अत्यावश्यक सेवाएं, कंपनियों और उद्योगों को भी सहायक हो सकता है जिन्हें पूर्ण रूप से काम करने की आवश्यक हो. यह मददगार है क्योंकि यह सार्वजनिक स्थानों पर भीड़ को कम करता है और सुरक्षित है। यह सार्वजनिक परिवहन पर निर्भर लोगों के लिए सुरक्षित यात्रा में भी मदद करेगा. इस महामारी के कारण विद्यालय एवं नर्सरी अभी तक बंद हे, इसलिये दफ्तरों में ऐसी व्यवस्था कामकाजी माताओं के लिये अनिवार्य है जिससे उनको घर पर अपने छोटे बच्चों की देखभाल एवं उनकी शिक्षा के लिये सहायक बन सकता है। आधिकारिक बैठकें और यहां तक कि नौकरी के साक्षात्कार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किए जा सकते हैं .

भोजनशाला भी अपनी सुरक्षित आय को सक्षम करने वाले पार्सल सेवाओं के लिए खोल सकते हैं। सभी को सख्त स्वच्छता प्रोटोकॉल और सामाजिक दूरी के साथ पालन किया जाना चाहिए।

हमारे बच्चों के बारे में क्या? उन्हें अपने कैंपस या वार्डों के अंदर ही खेलने की सुविधा दी जानी चाहिए। यहां तक कि शैक्षिक सुविधाओं को भी ऐसी सुविधा में वापस लाया जाना चाहिए ताकि लोगों की संचलन अपने आप प्रतिबंधित हो सके। इन वार्डों के भीतर आवश्यक चीजें उपलब्ध कराई जानी चाहिए जैसे सरकारी क्लिनिक , औषधालय, बाज़ार, तथा मोबैल रीचर्ज। इन व्यवस्थाओं को स्थायी आधार पर किया जाना चाहिए ताकि भविष्य में किसी बीमारी के दूसरे प्रकोप को रोका जा सके।

विवाह या किसी भी अन्य पारिवारिक कार्यक्रम मे धन की स्थिति का प्रक्षेपण नहीं होना चाहिए, इसके बजाय यह समारोह रिश्तों के महत्व पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। और ऐसी कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में भी कम से कम संख्या पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

लोगों का एक सेक्टर भी है जिन्हें प्यार की ज़रूरत है– अनाथालय, मानसिक रूप से बीमार और वृद्धाश्रम. हम उनके लिए क्या कर सकते हैं? उन प्रवासी भारतीयों के बारे में क्या जो अपने कार्यक्षेत्र से बेरोज़गार लौटे हैं? दिहाड़ी मज़दूरों को रोज़गार खोजने के लिए यहां-वहां घूमना

पड़ेगा। ऑटो ड्राइवरों, टैक्सी ड्राइवरों और ऐसे सभी लोगों को इस समय के दौरान नियमित आय के लिए लड़ने की ज़रूरत है। कपड़ा की दुकानें, फैंसी स्टोरों को आवश्यक वस्तु बेचने वाली दुकानों में स्थानांतरित करना चाहिए। ज्वैलरी , छोटे बैंकों में बदल सकती है जो फिलहाल गोल्ड लोन के लिये तैयार हो सकते है। सड़क भिखारियों, बेघरों के बारे में क्या? उन्हें कोई आश्रय मिलेगा?

हमें जन्म दर को भी देखना चाहिए। लोगों को अस्पतालों में और इलाज के लिए जाने का डर है। यह निजी अस्पतालों मे काम करने वाले कर्मचारियों को स्पष्ट रूप से प्रभावित करेगा क्योम्कि उन्हें तन्ख्वा कैकसी मेलेगी। और यहां तक कि जन्म दर पर भी काफी प्रभाव पड़ता है क्योंकि लोग इस दौरान गर्भ धारण करने से डरते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स और ऑटोमोबाइल के निर्माण और विपणन के बजाय आने वाले वर्षों में खाद्य सुरक्षा पर अधिक महत्व और ध्यान दिया जाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया तो हमारे देश का भविष्य काफी खतरे में है।

पता नहीं सैनिटाइज़र और फेस मास्क के इस अतिरिक्त उपयोग का क्या प्रभाव पड़ने वाले हे। हम एक ज़िम्मेदार जीवित व्यक्ति हैं जो इस्तेमाल किए गए मास्क, पीपीई और अन्य चिकित्सा दूषित कचरे को कुशलतापूर्वक निपटाना नहीं भूलना चाहिए . यदि नहीं तो यह सब भी समुद्र में समाप्त हो जाएगा

अवांछित अतिथि हमें सिखा सकता है...

इस समय तक सभी संभावित निवारक उपाय और सब कुछ व्यक्तिगत लाभ, प्रसिद्धि या चुनाव जीतने के लिए किया जा सकता है या नहीं किया जा सकता है। लेकिन अब चीजें बदल रही हैं। हमें अपने परिवार की सुरक्षा के लिए और आखिरकार पृथ्वी पर इंसानों के अस्तित्व के लिए खुद की रक्षा करने में मदद करने की ज़रूरत है। यह सच है। एक समय आ रहा है जब हम दैनिक भोजन, और यहां तक कि पानी के लिए लडेंगे। एक विघटित राज्य के राजा होने के बजाय एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण के प्रजा होने के लिए हम अभी लड़ सकते हैं। यह वही है जो कोविड 19 हमें सिखाता है।

“हममें बदलाव लाने के लिए अभी भी समय है”